सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नस्र

मदद

पूरा सफ़र — वो अलविदा जिसे किसी ने पहचाना नहीं —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 110 • 3 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इज़ा जा-अ नस्रुल्-लाहि वल्-फ़त्ह
1. जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ जाए।

व र-अयतन्-नास यद्ख़ुलूना फ़ी दीनिल्-लाहि अफ़्वाजा
2. और आप लोगों को फ़ौज दर फ़ौज अल्लाह के दीन में दाख़िल होते देखें।

फ़-सब्बिह् बि-हम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िर्ह
3. तो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और उससे मग़फ़िरत माँगिए।

इन्नहू काना तव्वाबा
3. बेशक वो बहुत तौबा क़ुबूल करने वाले हैं।

सुब्हानकल्-लाहुम्म व बि-हम्दिक, अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली
नबी ﷺ इस सूरह के बाद ये कलिमात कसरत से कहते थे।

जिस दिन मक्का खुला

बेटा, यह सूरह नबी ﷺ की ज़िंदगी के सबसे बड़े कामयाबी के दिन के बारे में है — और इसमें एक राज़ छुपा हुआ है जिसे सिर्फ़ सबसे गहरे सहाबा ने पकड़ा।

'इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्-फ़त्ह — जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ जाए।'

बेटा, याद कीजिए कि उन लोगों ने उनके साथ क्या किया था। उनका मज़ाक़ उड़ाया, उनके ख़ानदान का ऐसा बायकाट किया कि बच्चे भूख से रोते थे, उनके मानने वालों को अज़ाब दिया, कुछ को क़त्ल किया, उन्हें क़त्ल करने की साज़िश की, उन्हें उनकी पैदाइशी शहर से निकाल दिया, और फिर सालों तक लश्कर पर लश्कर भेज कर उनका पीछा किया।

और फिर, हिजरत के आठवें साल, आप ﷺ वापस आए — दस हज़ार के साथ। मक्का मुक़ाबला नहीं कर सकता था। जिस शहर ने उन्हें निकाला था, वो उनके सामने खुला पड़ा था।

बेटा, यह बदला लेने का लम्हा था। इंसानी फ़ितरत का हर क़ानून यही कहता था। अरबों का हर दस्तूर इसकी इजाज़त देता था। सहाबा के अपने हिसाब बाक़ी थे; कुछ ने अपने घर वालों को अपनी आँखों के सामने क़त्ल होते देखा था।

और आप ﷺ ने क्या किया? आप मक्का में इस तरह दाख़िल हुए कि अल्लाह के सामने आजिज़ी में सर इतना झुका हुआ था कि आपकी दाढ़ी मुबारक कजावे को छू रही थी। फ़ातेह का अंदाज़ नहीं। एक बंदे का अंदाज़।

आप ﷺ ने मक्का वालों को काबा के पास जमा किया — वही लोग जिन्होंने यह सब किया था — और पूछा: 'तुम्हारा क्या ख़याल है, मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगा?' उन्होंने कहा: भला; आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ भाई के बेटे हैं।

और आप ﷺ ने फ़रमाया: 'जाओ — तुम सब आज़ाद हो।'

बेटा, जब भी आपको किसी ऐसे शख़्स पर इख़्तियार मिले जिसने आप पर ज़ुल्म किया हो, यह दिन याद कीजिए। यह इंसानी अख़लाक़ की बुलंदी है, और यह हमारे नबी ﷺ की है।

फ़ौज दर फ़ौज

'व र-अयतन्-नास यद्ख़ुलूना फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा — और आप लोगों को अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल होते देखें।'

बेटा, 'अफ़्वाजा' — झुंड के झुंड, लहर दर लहर, गिरोह के बाद गिरोह। फ़तह से पहले लोग एक एक कर के, छुप कर, बहुत बड़ी क़ीमत दे कर इस्लाम में आते थे। उसके बाद पूरे के पूरे क़बीले साथ आने लगे — अरब के हर कोने से वफ़्दें आने लगीं, इतनी कि नौवें साल को ही 'वफ़्दों का साल' कहा जाता है।

यह तब्दीली क्यों? बेटा, क्योंकि बहुत से क़बीले यह देखने का इंतिज़ार कर रहे थे कि मुहम्मद ﷺ और उनके अपने लोगों के दरमियान फ़ैसला क्या होता है। जब मक्का ने उन्हें क़ुबूल कर लिया, तो उनकी झिझक ख़त्म हो गई।

बेटा, इससे सबक़ लीजिए: तेईस साल की सब्र वाली मेहनत, जिसका बड़ा हिस्सा

ज़ाहिरी तौर पर बे-नतीजा लगता था — और फिर पूरी फ़सल एक साथ आ गई। शुरू के सालों में उनके पास गिने चुने साथी थे और पूरा शहर दुश्मन था। नतीजों के पैमाने पर नापने वाला उसे नाकामी कहता।

तो बेटा, अपनी मेहनत को उसकी दिखने वाली रफ़्तार से कभी मत नापिए। बीज अपना वक़्त ज़मीन के नीचे लेते हैं, और फिर एक ही मौसम में पूरा खेत हरा हो जाता है।

तस्बीह कीजिए, और मग़फ़िरत माँगिए

और अब बेटा, हुक्म — और यही इस सूरह का सबसे हैरत-अंगेज़ हिस्सा है: 'फ़-सब्बिह् बि-हम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िर्ह — तो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए, और उससे मग़फ़िरत माँगिए।'

बेटा, लम्हे पर ग़ौर कीजिए। इस मिशन की तारीख़ की सबसे बड़ी फ़तह अभी अभी आई है। और इसका मुक़र्रर जवाब क्या है?

पहला — 'सब्बिह् बि-हम्दि रब्बिक': अल्लाह को हर नक़्स से पाक क़रार दीजिए, और उनकी हम्द कीजिए। यानी: यह मेरा नहीं था। न मेरी तदबीर, न मेरा लश्कर, न मेरा सब्र। यह अल्लाह की फ़तह थी — आयत ख़ुद इसे 'नस्रुल्लाह' कह रही है, अल्लाह की मदद।

बेटा, और यही उस सबसे ख़तरनाक लम्हे का इलाज है जो किसी भी इंसान की ज़िंदगी में आता है: कामयाबी का लम्हा। नाकामी मोमिन को कम ही तबाह करती है; कामयाबी अक्सर कर देती है। जब सब ठीक चल रहा हो, तो नफ़्स ख़ामोशी से आगे बढ़ कर सेहरा अपने सर बाँध लेता है।

दूसरा — और यही हैरत वाली बात है — 'वस्तग़्फ़िर्ह': और उससे मग़फ़िरत माँगिए।

बेटा, फ़तह के बाद इस्तिग़्फ़ार क्यों? किस चीज़ की माफ़ी?

उलमा ने तफ़्सीर की: क्योंकि इंसान की कोई भी कोशिश, चाहे कितनी ही बड़ी हो, कोताही से ख़ाली नहीं होती। तेईस साल की दावत में थकन के लम्हे आए, ध्यान बँटने

के लम्हे आए, वो लम्हे भी आए जब कमाल से कम हुआ। और इसलिए भी कि बंदा जब इतनी बड़ी अता के सामने खड़ा होता है, तो उसे शिद्दत से महसूस होता है कि उसकी अपनी मेहनत इसके क़ाबिल ही नहीं थी। तो वो अपने अमल को इस्तिग़फ़ार से ढाँप लेता है — जैसे कोई हक़ीर तोहफ़ा कपड़े में लपेट कर पेश किया जाए।

और बेटा, यही हमारी पूरी इबादत का तरीक़ा है — देखिए कितनी इबादतें इस्तिग़फ़ार पर ख़त्म होती हैं। नमाज़ के बाद: 'अस्तग़िफ़रुल्लाह' तीन बार। हज के आख़िर में अल्लाह का हुक्म है: 'फिर वहीं से लौटो जहाँ से लोग लौटते हैं, और अल्लाह से मग़फ़िरत माँगो।' रात की नमाज़ के बाद मोमिनीन की सिफ़त बताई गई: 'सहरी के वक़्त मग़फ़िरत माँगने वाले।' और पूरी नुबुव्वत की ज़िंदगी के बाद — इस्तिग़फ़ार।

बेटा, यह अदा सीख लीजिए: अपना बेहतरीन काम मुकम्मल कीजिए, और फिर उसके लिए माफ़ी माँगिए। सिर्फ़ यही एक आदत इंसान को ज़िंदगी भर तकब्बुर से बचा लेती है।

'इन्नहू काना तव्वाबा — बेशक वो हमेशा तव्वाब हैं — मुसलसल उनकी तरफ़ लौटने वाले जो उनकी तरफ़ लौटें।'

वो अलविदा जिसे किसी ने पहचाना नहीं

और अब बेटा, इस सूरह का छुपा हुआ मतलब — वही जिसका मैंने शुरू में वादा किया था।

उमर बिन अल-ख़त्ताब (रज़ि0) इब्ने अब्बास (रज़ि0) को बद्र के बड़े सहाबा की महफ़िलों में साथ बिठाते थे, हालाँकि वो बहुत कम उम्र थे, और कुछ लोगों को यह नागवार गुज़रता था। तो एक दिन उमर (रज़ि0) ने उन सबसे इसी सूरह के बारे में पूछा: 'इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्-फ़त्ह' के बारे में तुम क्या कहते हो?

कुछ ने कहा: हमें हुक्म दिया गया है कि जब फ़तह मिले तो अल्लाह की हम्द करें और मग़फ़िरत माँगें। कुछ ख़ामोश रहे।

फिर उमर (रज़ि0) ने इब्ने अब्बास (रज़ि0) की तरफ़ रुख़ किया और पूछा: क्या तुम

भी यही कहते हो? उन्होंने कहा: नहीं। उमर (रज़ि0) ने पूछा: तो फिर तुम क्या कहते हो?

इब्ने अब्बास (रज़ि0) ने कहा: यह रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात का एलान है, जिसकी ख़बर अल्लाह ने उन्हें दी। 'जब अल्लाह की मदद और फ़तह आ जाए' — यही आपकी रुख़्सत की निशानी है — 'तो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह कीजिए और उससे मग़फ़िरत माँगिए; बेशक वो बहुत तौबा क़ुबूल करने वाले हैं।'

और उमर (रज़ि0) ने फ़रमाया: मैं इससे वही जानता हूँ जो तुम जानते हो।

बेटा, इस बात का वज़्न महसूस कीजिए। सूरह पढ़ने में जश्न लगती है — और सबसे गहरे सहाबा ने इसमें अलविदा की आवाज़ सुनी। मिशन मुकम्मल हो गया; काम पूरा हो गया; अब हम्द कीजिए, मग़फ़िरत माँगिए, और लौटने की तैयारी कीजिए।

और तारीख़ ने इसकी तस्दीक़ की: यह आख़िरी मुकम्मल नाज़िल होने वाली सूरहों में से थी, और नबी ﷺ का विसाल इसके ज़्यादा अरसे बाद नहीं हुआ। हमारी माँ आइशा (रज़ि0) से मरवी है कि इसके नाज़िल होने के बाद आप ﷺ ने ये कलिमात कसरत से कहना शुरू कर दिए: 'सुब्हानक अल्लाहुम्म व बि-हम्दिक, अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली' — ऐ अल्लाह, आप पाक हैं और सारी तारीफ़ आपकी, ऐ अल्लाह, मुझे बख़्श दीजिए — सूरह पर अमल करते हुए।

बेटा, इससे दो चीज़ें लीजिए।

एक — किसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी कामयाबी इस बात की भी अलामत होती है कि वो ज़िंदगी अपने अंजाम की तरफ़ बढ़ रही है। हर तकमील आख़िरी तकमील के एक क़दम क़रीब है। यह मायूस करने वाला ख़याल नहीं — यह साफ़ करने वाला ख़याल है। यह हमें किसी भी कामयाबी में ऐसे जम कर बैठने से रोकता है जैसे वो हमेशा रहने वाली हो।

दो — देखिए कि तारीख़ के सबसे अज़ीम इंसान को उनका वक़्त क़रीब होने की ख़बर कैसे दी गई: तस्बीह और इस्तिग़्फ़ार के हुक्म के साथ। न घबराहट, न कोई लंबी ख़्वाहिशों की फ़ेहरिस्त, न आख़िरी वक़्त की हड़बड़ी। बस तस्बीह और इस्तिग़्फ़ार।

बेटा, मोमिन अपने अंजाम के सामने इसी तरह आता है: उसी की तारीफ़ करते हुए जिसने सब कुछ दिया, और इस बात की माफ़ी माँगते हुए कि उसने वो सब कितनी कोताही से सँभाला।

इस सूरह से क्या सीखा

1. इक़्तिदार के उरूज पर आप ﷺ ने सर झुका लिया और सबको माफ़ कर दिया — यही अख़लाक़ की बुलंदी है।

2. अपनी मेहनत को उसकी दिखने वाली रफ़्तार से मत नापिए: तेईस साल का सब्र, फिर लहर दर लहर फ़सल।

3. कामयाबी नाकामी से ज़्यादा ख़तरनाक है — फ़तह का जवाब यही है कि 'यह अल्लाह का था, मेरा नहीं।'

4. अपना बेहतरीन काम मुकम्मल कीजिए और फिर उसके लिए माफ़ी माँगिए — हर इबादत के बाद इस्तिग़फ़ार की सुन्नत।

5. वो 'तव्वाब' हैं — जो भी उनकी तरफ़ लौटता है, वो हमेशा उसकी तरफ़ लौट आते हैं।

6. हर तकमील आख़िरी तकमील को क़रीब लाती है — कोई कामयाबी मुस्तक़िल घर नहीं।

7. अंजाम का सामना वैसे कीजिए जैसे आप ﷺ को सिखाया गया: तस्बीह और इस्तिग़फ़ार के साथ, घबराहट से नहीं।

सुब्हानक अल्लाहुम्म व बि-हम्दिक, अल्लाहुम्मग़फ़िर ली — या अल्लाह, हमारी फ़तहें आपकी हों और हमारे अंजाम ख़ूबसूरत। आमीन।